SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

राजकुमार शर्मा, (Ph.D.),
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
राजकुमार शर्मा, (Ph.D.),
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 31/12/2020
Plagiarism : 06% on 28/12/2020

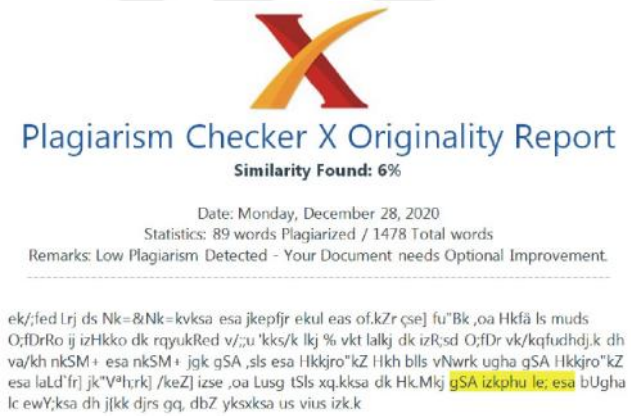
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 6%

Date: Monday, December 28, 2020
Statistics: 89 words Plagiarized / 1478 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ek/;fed Lrj ds Nk=&Nk=kvksa esa jkepfjr ekul eas of.kZr çse] fu"Bk ,oa Hkfä ls muds O;fDrRo ij izHkko dk rqyukRed v/;;u 'kks/k lkj % vkt lalkj dk izR;sd O;fDr vk/kqfudhdj.k dh va/kh nkSM+ esa nkSM+ jgk gSA ,sls esa Hkkkjro"kZ Hkh blls vNwrk ugha gSA Hkkkjro"kZ esa laLd`fr] jk"Vªh;rk] /keZ] izse ,oa Lusg tSls xq.kksa dk Hk.Mkj gSA izkphu le; esa bUgha lc ewY;ksa dh j[kk djrs gq, dbZ yksxksa us vius izk.k

शोध सार

आज संसार का प्रत्येक व्यक्ति आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ में दौड़ रहा है। ऐसे में भारतवर्ष भी इससे अछूता नहीं है। भारतवर्ष में संस्कृति, राष्ट्रीयता, धर्म, प्रेम एवं स्नेह जैसे गुणों का भण्डार है। प्राचीन समय में इन्हीं सब मूल्यों की रक्षा करते हुए कई लोगों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। वर्तमान समय में इन सभी नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में संक्रमण काल चल रहा है। ऐसे में परिवार, समाज और इनमें रहने वाले लोग भी मूल्यों को भूलते जा रहे हैं, तो फिर माध्यमिक स्तर के बच्चों में इन मूल्यों की कैसे अपेक्षा की जा सकती है। अब घरों में रामायण, गीता का पाठ नहीं होता, टी.वी. इन्टरनेट की आज की युवा पीढ़ी इन सब नैतिक मूल्यों से दूर होती जा रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से व्यक्तित्व पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया है। जिसमें माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं से स्व–निर्मित प्रश्नावली भरवाकर तथ्यों का संकलन किया है।

मुख्य शब्द

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राएं, रामचरित मानस, प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति, व्यक्तित्व।

प्रस्तावना

संसार का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी के प्रति आस्थावान, श्रद्धावान एवं निष्ठावान होता है। इसमें व्यक्ति आत्म बलिदान एवं समर्पण की भावना से संचालित होता है। व्यक्ति अपने परिवार माता–पिता, गुरू एवं विशिष्ट महाननेताओं के प्रति आस्थावान, निष्ठावान और समर्पण की भावना रखता है।

प्राचीनकाल से लेकर आज तक के इतिहास को

देखा जाए तो व्यक्ति अपनी मातृभूमि के प्रति पूर्ण निष्ठावान और आत्मबलिदान एवं समर्पण की भावना से प्रेरित होता दिखाई देता है। यही आत्मसमर्पण एवं बलिदान की भावना ही उसे अपने अस्तित्व के प्रति जागृत रखती है, अपने अस्तित्व का भान कराती है, व्यक्ति में अस्मिता एवं चौतन्य का संचार करती है। ऐसी ही एक पवित्र भावना है राष्ट्रीयता, राष्ट्रीयता को राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्र भक्ति या देशभक्ति के अलग–अलग नामों से पहचाना जाता है। इन सभी नामों में एक ही तत्व और एक ही भावना सन्निहित है और वह है अपनी मातृभूमि, अपने देश या राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पित एवं आत्म बलिदान की भावना। राष्ट्र के प्रति पवित्र प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति। राष्ट्रवाद एक क्रांतिकारी भावना है। यह अपने राष्ट्र या मातृभूमि के प्रति भक्ति एवं निष्ठा से नतमस्तक होने की भावना है। कोई भी व्यक्ति अपने देश या मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम रखता है। यह बात अलग है कि राष्ट्रद्रोही एवं गद्दार व्यक्ति भी होते हैं, लेकिन अधिकतर मनुष्य अपनी मातृभूमि को उतना ही प्यार करते हैं, जितना वे अपनी माता से प्यार करते हैं। इसलिए ही वाल्मिकीय रामायण में राम वनवास के समय लक्ष्मण के साथ लंका में होते हैं, तब लक्ष्मण से **"अपि नमें रोचते स्वर्णमयीं लंका जननि जन्मभूमिश्च सवर्गादपि गरियसी"** राष्ट्रवाद की भावना एक पवित्र आंतरिक भावना है। इसका संबंध हृदय–पक्ष से अधिक है। हमारे हृदय मंदिर में जब तक किसी को स्थान नहीं मिला तब तक हम उसको स्वीकार्य नहीं करते और जो अपने हृदय को जीत लें,उसे छू जाय उसके प्रति पूर्ण समर्पित हो जाते हैं। राष्ट्र भावना ऐसी ही भावना है, जो राष्ट्रवाद के रूप में भी पहचानी जाती है।

भारतवर्ष ऋषियों की साधना स्थली, संतों की उपासना स्थली एवं मुनियों की तपस्थली रहा है। जिनका प्रमुख आधार था 'अध्यात्म' और साधन था 'धर्म'। इसी धर्म और अध्यात्म को आधुनिक भारत की सांस्कृतिक धुन के साथ गाया था विवेकानंद ने। आधुनिक विज्ञान के नाम पर प्रचलित भौतिकवाद के अनचाहे प्रभाव से यह शाश्वत सनातन सत्य लुप्त प्रायः होता चला जा रहा था। ऐसे कठिन समय में उन्हें डर था कि कहीं भारत से धर्म लुप्त ही न हो जाए। स्वामी विवेकानन्द के लिए भारत और धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू थे। संसार के सभी लोग निरापद जीवन व्यतीत करें, ऐसी धारणा का अंकुरण, पल्लवन ही हमको विश्व गुरु की श्रेणी में ले गया था। अध्यात्म का आश्रय लेकर सम्पूर्ण जगत में एक ही आत्मतत्व की मान्यता स्थापित की।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से कितनी जागरूकता आती है, इस शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। आजकल विद्यार्थी इतने तनावग्रस्त हो रहे हैं कि वे धार्मिक मान्यतायें भूलकर टी.वी. इन्टरनेट से अपना मनोरंजन कर रहे हैं। ऐसे में शोधार्थी द्वारा शोध कर यह पता लगाने की कोशिश की गई है कि क्या रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव पड़ता है, क्या वे अपने व्यक्तित्व का विकास कर प्रेम, निष्ठा से अपने को दूसरों के साथ समायोजित कर पाते हैं। यही सब जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा शोध पत्र के माध्यम से किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस से उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

- माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन का परिसीमन

- शोध का क्षेत्र मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर तक सीमित है। यह अध्ययन कक्षा 9वीं के छात्र–छात्राओं तक सीमित है।

न्यादर्श चयन

- प्रस्तुत शोध प्रंबध के लिए सरल या यादृच्छिक विधि से है। ग्वालियर में स्थित 3 माध्यमिक विद्यालयों को चुना गया है, जिनमें से प्रत्येक विद्यालय से 05 छात्र एवं 05 छात्राओं का चयन किया गया है। कुल मिलाकर 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

- शोधार्थी द्वारा शोध हेतु स्व–निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया है, जिसमें रामचरित मानस से संबंधित 15 प्रश्नों को रखा गया है। प्रश्नावली में दो विकल्प हाँ या नहीं रखे गये हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

शोधार्थी के प्रस्तुत शोध समस्या के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है:

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. टी–मान

आंकडों का विश्लेषण

परिकल्पना 1 – माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका क्र. 1

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रतांश	विश्वास स्तर		टी–मान
छात्र	1.61	0.63	28	0.01	2.76	0.38
छात्राऐं	1.70	0.68		0.05	2.05	

28 स्वतंत्रतांश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.76 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.05 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.38 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2 – माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका क्र. 2

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रतांश	विश्वास स्तर		टी–मान
छात्र	1.42	0.65	28	0.01	2.76	1.11
छात्राऐं	1.71	0.78		0.05	2.05	

28 स्वतंत्रतांश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.76 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.05 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.11 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस से उनके व्यक्तित्व एवं रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका प्रमुख कारण है कि बच्चों ने अपने परिवार में रामायण जैसे महान एवं पवित्र ग्रंथ के विषय में सुना ही नहीं है। आजकल माता–पिता मनोरंजन के तौर पर घरों में टी.वी. एवं मोबाइल का उपयोग करते हैं, न वे रामायण पढ़ते हैं और न ही उसके विषय में बच्चों को बता पाते हैं। लेकिन यदि बच्चों को अभिभावक रामचरित मानस के विषय में बताते तो बच्चों में भी प्रेम, त्याग, बलिदान निष्ठा एवं भक्ति के भाव जाग्रत होते। परंतु बच्चों को पता ही नहीं है या उनको बताने वाला कोई नहीं है, तो वे कैसे इसके विषय में जान सकेंगे और अपने व्यक्तित्व का विकास एवं निखार कर सकेंगे। इसीलिए माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में रामचरित मानस से उनके व्यक्तित्व एवं रामचरित मानस में वर्णित प्रेम, निष्ठा एवं भक्ति से उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सुझाव

1. माता–पिता को अपने परिवार में रामचरितमानस का पाठ करना चाहिए।
2. अभिभावकों को अपने बच्चों को उपदेशात्मक कहानी एवं हमारे धार्मिक ग्रंथों के महत्व के विषय में बताना चाहिए।
3. अभिभावकों को बच्चों में प्रेम, त्याग, बलिदान निष्ठा एवं भक्ति के भाव जाग्रत करने के लिए धार्मिक ग्रंथों का पाठ करके उन्हें बताना चाहिए।
4. अपने प्राचीन परंपरा का निर्वहन करते हुए अभिभावकों को बच्चों से धार्मिक बातें करनी चाहिए।
5. विद्यार्थियों को पारिवारिक वातावरण में बड़ों के सान्निध्य में रहकर नैतिक मूल्य सीखना चाहिए एवं उनका पालन करना चाहिए, जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आ सके।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी व्यास, शांतिकुमार, *रामायणकालीन समाज,* सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
2. गोस्वामी तुलसीदास, *श्री रामचरितमानस,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. उपाध्याय, बलदेव, (1999), *संस्कृत साहित्य का शारदा निकेतन,* दशम् संस्करण इतिहास कस्तूरबा नगर सिगरा वाराणसी।
4. तुलसीदास, *रामचरित मानस,* गोविन्द भवन कार्यालय गीता प्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.) वि. सम्वत् 1996।

****